शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2013

हिंदू धर्म एवं समाज पर हनुमान का प्रभाव

डा. तपेश कुमार चौरे (शोधार्थी)
संस्कृत विभाग,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

शोध संक्षेप

आज विश्व मानचित्र पर जो दृश्य उपस्थित है, उससे हम भली-भांति परिचित हैं । नैतिक मूल्यों का ह्रास, टूटते रिश्ते आदर्शों का खोखलापन आदि अनेक विध समस्याओं का साम्राज्य जैसे चहुं और छा गया है, जिनका समाधान वैज्ञानिकों के पास नहीं है । वे अपने आविष्कार से, मानव को सुख समृद्धि के साधनों से समृद्धकर उसे भौतिक सुख तो प्रदान कर सकते हैं, परंतु मानसिक शांति नहीं । हमें शांति धर्म एवं अध्यात्म ही प्रदान कर सकता है। जिनका निरूपण प्रत्यक्ष रूप से उपनिषद एवं दर्शन आदि शास्त्रों में तथा अप्रत्यक्ष रूप से रामायण आदि महाकाव्यों में कान्तासम्मित उपदेश की शैली में हुआ है। रामायण का प्रणयन कर उसके पात्रों द्वारा धर्म , संस्कृति, आदर्श, नैतिक मूल्यों की स्थापना ही नहीं की, अपितु भावी समस्याओं के कारण एवं उनके निवारण के उपायों का दिग्दर्शन भी कराया है । इसीलिए इसे कालजयी रचना कहा जाता है। उन पात्रों में एक विशिष्ट अद्वितीय चरित हैं हनुमान । प्रस्तुत शोध पत्र में श्री हनुमान जी के प्रभाव का आकलन किया गया है।

प्रस्तावना

हनुमान अनुपम भक्ति का चूडान्त निदर्शन ही प्रस्तुत नहीं करते अपितु समाज में फैली बुराईयों को दूर करने के उपायों को प्रायोगिक रूप में अपने चरित के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं । वे उपाय उस काल के लिये जितने उपयोगी थे उतने ही आज भी हैं । आवश्यकता हैं उन्हें जीवन में चरितार्थ करने की, उनके क्रियान्वयन की, इस दृष्टि से रामायण को पढ़ने की, नये आयामों को व्याख्यायित कर उसे जन-जन तक पहुंचाने की । आज हनुमान की पूजा से अधिक उनके चरित को उनके द्वारा किये गये कार्यों, उनके गुणों को जीवन का अंग बनाने की आवश्यकता है । रामायण का प्रत्येक पात्र चाहे छोटा हो या बड़ा, अच्छा हो या बुरा कुछ न कुछ संदेश अवश्य देता है, परंतु हनुमान जी की बात निराली है । जहां अन्य पात्र अपने चरित द्वारा आदर्श की स्थापना करते हैं, मर्यादित जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं, वहीं हनुमान इन सबके साथ वर्तमान समस्याओं के निवारण का मार्ग प्रशस्त करते हैं । समुद्र को लांघकर सीता की खोज करना, रावण की स्वर्णमयी लंका को भस्म करना, लक्ष्मण को शक्तिबाण लगने पर आधी रात तक ही हिमालय पर्वत पर जाकर संजीवनी बूटी वाले पर्वत को उठा लाना महावीर हनुमान के पुरूषार्थ के अतुलनीय उदाहरण हैं, जिनका वर्णन करके भारतीय समाज के लोगों की नस-नस में प्राण और जीवन का संचार किया जा सकता है । हनुमान के निर्भीकता के प्रसंग तो रामायण में सर्वत्र देखने को मिलते हैं ।

हनुमानजी और हिन्दू समाज

आदिकवि वाल्मीकि ने हनुमान के लंका दहन प्रसंग से विश्व समाज को बहुत उपयोगी व महत्वपूर्ण उपदेश दिया है । वह यह है कि दुष्ट

स्वयं अपना विनाश करता है । लोक में यह माना जाता है कि हनुमान ने लंका जलायी । परंतु वास्तविकता यह है कि रावण ने स्वयं अपने दुष्कर्म से लंका को हनुमान से दग्ध करवाया । वानर लंगूर प्रिय होता है, और उसके लिये उसका न होना सबसे बड़ी सजा होगी । यह सोचकर रावण ने हनुमान की पूँछ में आग लगाने का आदेश दिया । परंतु वह भूल गया कि वानर उछल -कूद करने में समर्थ होते हैं। हनुमान तो असाधारण बल, वीर्य संपन्न भी थे । ऐसे में विनाश होना स्वाभाविक था । हनुमान ने केवल आग से बचने के लिये पंूछ को विस्तृत किया और बुझाने के प्रयत्न से लंका जल गयी । सीता जी ने वहां रहते हुये वे ऐसा सोच भी कैसे सकते थे । जैसे ही उन्हें विचार आया कि कहीं यह आग अशोक वाटिका तक न पहुंच जाय, उन्होंने आग बुझा ली ।

इस घटना से यह शिक्षा मिलती है कि दुष्ट व्यक्ति अपना विनाश कैसे करता है । इस प्रकार हनुमान के जीवन चरित्र के माध्यम से वाल्मीकि जी ने हमें जो उपदेश दिया वह सार्वकालिक होने के साथ-साथ हमारी समस्याओं के समाधान करने में भी समर्थ हैं । इतना ही नहीं वाल्मीकि जी ने हनुमान के चरित से एक महत्वपूर्ण शिक्षा यह भी दी कि जीवन में कुछ भी असंभव नहीं हैं, अपितु सब कुछ संभव हो सकता है, दृढ़ इच्छा शक्ति से । हनुमान का संपूर्ण जीवन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है ।

हनुमान जी एक ऐसे उदात्त विलक्षण सर्वांग विकसित चरित के सर्वाधिक चर्चित, अभिनंदित, पूजित जन देवता हैं जो समग्रता, ज्ञान, भक्ति, कर्म, दैन्य, समर्पण और शरणागति जैसे दिव्य गुणों से परिपूर्ण है । उनके स्मरण मात्र से संताप कष्टों और भाव बाधाओं से मुक्ति मिल जाती है । हनुमान जी को विभिन्न धर्म और सम्प्रदायों ने अपने-अपने ढंग से अंगीकृत और अभिनंदित किया है ।

हनुमान जी के जीवन के स्मरणीय बिन्दु -

1. स्वामी (राम) के लिये सर्वस्व त्याग ।
2. त्रिलोक के स्वामी रावण की नगरी में पहुंचकर बिना किसी भय के अपने बल का प्रयोग ।
3. लंका में चरित्र की दृढ़ता को प्रदर्शित करना ।
4. वैभव और विलासिता की नगरी लंका में प्रवेश के पश्चात् भी भगवान श्रीराम के प्रति, समर्पित होने के कारण हनुमान के मन में लोभराहित्य ।
5.समुद्र लंघन के समय बाधाओं के होते हुये भी अपने लक्ष्य के प्रति एकाग्रता ।
6. अनेक प्रलोभनों के होते हुए भी हनुमान वासना के शिकार नहीं हुए ।
7. सूक्ष्म रूप धारण कर सुरसा को◌े पराजित करना ।
8. संसार के प्रति मोह का त्याग ।
9. अतुलनीय पराक्रम होते हुए भी अहंकार का अभाव ।
10. विभीषण को धर्म के प्रति सचेत करना ।
11. श्रीराम के चरित को सीता जी के सम्मुख प्रस्तुत करना ।
12. सीता के अविश्वास को दूर करना ।

हनुमान के चरित से मिलने वाली महत्वपूर्ण शिक्षा -

1. धर्म में महान शक्ति है । जब समाज पर संकट आये तो अपना विराट रूप प्रदर्शित करना चाहिए ।
2. किसी को देखकर भयभीत नहीं होना चाहिए,

अपितु कारण का अन्वेषण कर प्रतिकार का प्रयत्न करना चाहिए ।
3. मायावी को सरलता के स्थान पर उसी की भाषा में प्रत्युत्तर देना चाहिए ।
4. विषम या विपरीत परिस्थिति में भयाक्रान्त हुए बिना स्वविवेक से निर्णय कर कार्य करना चाहिए ।
5. अनुभवी व्यक्तियों एवं गुरूजनों के मार्ग दर्शन को स्वीकार कर तदनुरूप कार्य करना चाहिए ।
6 गुरूजनों के प्रति विनय एवं श्रद्धा -भक्ति रखनी चाहिए और उनके वचनों का पालन करना चाहिए ।
7 स्वामी के प्रति पूर्ण समर्पण, श्रद्धा, निष्ठा एवं विश्वास रख उनकी प्रत्येक आज्ञा का पालन करना चाहिए ।
8 दुष्ट अपना विनाश स्वयं अपने कर्मों से करता है ।
9 जीवन में अपनी शक्ति, बल, वीर्य, पराक्रम, बुद्धिचातुर्य का अहंकार नहीं करना चाहिए ।
10 प्रशंसा से मदोन्मत नहीं होना चाहिए ।
11. शीघ्रता में कोई कार्य नहीं करना चाहिए ।
12 दृढ़ अच्छा शक्ति कार्य की सफलता की कुंजी है ।
13 मान अपमान की ओर ध्यान न देकर अपने स्वामी के हित में कार्य करना चाहिए ।
14 संसार के प्रति मोह को त्यागकर निष्काम कर्म का आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए ।

हनुमान जी ने समाज के लिये यह सीख दी कि मनुष्य को अपने मन को वश में कर मन पर विजय प्राप्त करना चाहिये । गुरू की आज्ञा का पालन करना चाहिए । हिन्दू धर्म में गुरू को सर्वश्रेष्ठ माना गया है । अपने पूर्वजों का सम्मान एवं आदर करने की शिक्षा भी हनुमान के चरित से मिलती है । जिस प्रकार हनुमान ने विनम्रतापूर्वक रावण से सीता को लौटा देने की प्रार्थना की थी, उसमें हमें यह प्रेरणा मिलती है कि व्यक्ति को विनम्र रहना चाहिए । अपने वैभव का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए । अनेकों विपत्तियों का सामना करते हुए मनुष्य को सर्वदा आगे लक्ष्य प्राप्ति के लिये बढ़ना चाहिये । इस प्रकार रामायण के हनुमान ने अपने चरित से विश्व को जो संदेश दिया वह सार्वकालिक होने के साथ ही सार्वदेशिक भी है । यह व्यक्ति मात्र के लिये ही उपयोगी नहीं अपितु सर्वजन हिताय है। वर्तमान समय में हनुमान जी की सर्वमान्य छवि 'महान संकटमोचन' तथा 'परमरक्षक' की है । उनके स्मरण मात्र से मनुष्य हर प्रकार की आशंकाओं से मुक्त हो जाता है। 'बजरंगवली' के नामोच्चार से व्यक्ति भय, बाधाओं और कष्टों से मुक्त हो जाता है। 'हनुमान चालिसा' का जाप एक रक्षा कवच का कार्य करता है । हनुमान जी के प्रति श्रद्धा तथा भक्ति की इन भावनाओं के अतिरिक्त हनुमान जी के एक अन्य महत्वपूर्ण योगदान का उल्लेख करना चाहता हूँ। वह योगदान है, भारतीय समाज को एकजुट रखने की । अत्यंत प्राचीन समय से भारतीय समाज जो मूलतः हिंदू समाज ही है, जिस एकता के सूत्र में पिरोया गया उसमें हनुमान की भूमिका का स्मरण बड़ी ही श्रद्धा के साथ किया जाता है। अत्यंत बलशाली परम पराक्रमी जितेन्द्रीय, ज्ञानियों में अग्रगण्य तथा भगवान राम के अनन्य भक्त हनुमान जी का जीवन भारतीय जनता के लिये सदा से प्रेरणादायक रहा है । हनुमान जी का अपने स्वामी श्रीराम के प्रति पूर्ण

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2013

समर्पण एवं उनके लिये त्याग की भावना हमें स्वामी भक्ति एवं त्याग की शिक्षा देती है । हनुमान वीरता की साक्षात् प्रतिमा, शक्ति, बल तथा पराक्रम की जीवंत मूर्ति है । भारतीय संस्कृति में देवता तो तैंतीस करोड़ हैं लेकिन 'संकटमोचन' सिर्फ एक ही है । अतुलित बल संपन्न, भक्त शिरोमणि हनुमान जी का जन्म चैत्र शुक्ल पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है । भक्तों में अग्रगण्य और अत्यंत बलशाली, जितेन्द्रीय श्रीराम के जनमानस के लिये सदा से ही प्रेरणा का अक्षय स्रोत रहा है । हनुमान श्रीराम के ऐसे भक्त है, जिन्हें प्रभु कृपा के सिवा कुछ नहीं चाहिए जैसा कि उन्होंने भगवान राम से माला उपहार में मिलने के बाद कहा -

"हे प्रभु मैंने इसके दाने-दाने देख लिये, कहिं भी आप नहीं हैं, मैं इसका क्या करूं ।"

तब उन्होंने श्रीराम को अपना हृदय चीरकर दिखाया कि -

"जब आप मेरे हृदय में है तो मुझे कुछ भी नहीं चाहिए ।"

अपने प्रभु के लिये कुछ भी करने का भक्त हनुमान सदा तत्पर रहते हैं । अपने पराक्रम का बखान हनुमान जी ने कभी नहीं किया, और कभी अपने करने का श्रेय भी नहीं लिया । उन्होंने जो भी किया, उसका श्रेय प्रभु श्रीराम को ही दिया । ऐसी अनन्य भक्ति इस संसार में बिरलों को ही प्राप्त होती है । यदि पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ उनका आश्रय ग्रहण कर ले तो प्रभु दर्शन में कुछ भी विलंब नहीं होगा, जैसा कि तुलसीदास जी ने स्वयं अनुभव किया और प्रभु श्रीराम के दर्शन किये । हनुमान जी मात्र परम प्रतापी बलशाली ही नहीं, ज्ञानियों में अग्रगण्य कुशल वक्ता भी हैं । प्रभु राम को जब प्रथम बार हनुमान जी मिले तो उन्होंने लक्ष्मण से कहा -

"हे लक्ष्मण मालूम पड़ता है कि इस व्यक्ति ने समस्त व्याकरणशास्त्र का खूब अध्ययन किया है ।"

यह भक्त की सबसे बड़ी विशेषता होती है कि बहुत आवश्यक होने पर ही वह अपने बल और पराक्रम का परिचय देता है । श्री हनुमान जी का जीवन सदा प्रभु सेवा में रहते हुये कल्याणकारी कार्यों मंे लगा रहा । कलयुग में हनुमान जी की भक्ति सदा प्रत्यक्ष फल प्रदान करती है । श्री हनुमान जी के जन्म के संदर्भ में बहुत सी कथाएं हैं । रामायण एवं पुराणों में कल्पभेद से लिखी सभी कथाओं के समन्वय से यह सिद्ध होता है कि वायु देवता की उपासना के फलस्वरूप वानरराज केशरी की धर्म पत्नी अञ्जनी के गर्भ से प्रलयंकर भगवान रूद्र अवतरित हुए । इसीलिए उन्हें पवन तनय शंकर सुवन, केसरी नंदन कहा गया है । रूद्रावतार होने के कारण हनुमान जी को शंकर सुवन वायु देवता की उपासना के उपरांत पैदा होने के कारण पवन तनय तथा अंजनी एवं वानरराज केसरी के घर में जन्म लेने के कारण अंजनी पुत्र केसरीनंदन कहा जाता है । इस आधार पर हनुमान जी के लौकिक माता पिता अंजनी एवं केसरी है । हनुमान जी को सर्वशास्त्रो का ज्ञाता माना जाता है । हनुमान जी जितने व्याकरण एवं आयुर्वेद के ज्ञाता थे उतने ही ज्योतिष शास्त्र के भी । जनमानस मे ंयह विश्वास है कि हनुमान जयंती के दिन हनुमान का पूजन एवं नाम सकीर्तन आदि सत्कार्य करने चाहिए । हनुमान जी की उपासना से सभी ग्रहों के दोष दूर हो जाते हैं । इसके अतिरिक्त आज के युवाओं एवं बालकों के मानस पटल पर अच्छी छाप डालने के लिये

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2013

शारीरिक शक्ति प्रदर्शन के खेल होने चाहिए तथा उसमें यह उद्देश्य होना चाहिये कि जैसे हनुमान ने सर्वाधिक शक्तिशाली होने पर भी अपनी शक्ति का अनावश्यक उपयोग नहीं किया बल्कि जन कल्याण का काम किया, वैसे ही हम भी करें । युवाओं को भी भारतीय संस्कृति के इस अद्वितीय वीर की जीवनगाथा से प्रेरणा लेनी चाहिए ।

हनुमान ने अपने चरित द्वारा जहां भक्ति की गंगा प्रवाहित की है, वहीं नीति का उपदेश भी दिया है। बल, वीर्य, असहायों के उत्पीड़न के लिये नहीं अपितु दुष्टों के दमन के लिये है । हनुमान चरित्र के माध्यम से वाल्मीकि ने आर्य संस्कृति की उदात्तता का जिस कुशलता से निरूपण किया है, वह अपने आप में एक निदर्शन है । हनुमान भक्तों के आदर्श हैं तो उनकी भक्ति जनगण की प्रेरणा के स्रोत हैं। हनुमान के विचक्षणता, विनम्रता, निर्भीकता, कार्यकुशलता, त्याग, समर्पण, निष्ठा, भक्ति आदि गुण हमें जीवन जीने की कला ही नहीं सिखाते अपितु एक आदर्श समाज की रचना में भी सहयोगी होते हैं । सीताशोक विनासन, रामेष्ट, उदधिक्रमण, लक्ष्मण प्राणदाता, हनुमान, दशग्रीव दर्पता, पिंगाक्ष आदि ।

भक्तों की मनोकामना पूर्ण करने वाले - भारतीय संस्कृति तथा हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुसार हनुमान जी को मनोकामना पूर्ण करने वाला देवता माना जाता है । इसलिए मन्नत मांगने वाले अनेक स्त्री-पुरूष हनुमान की मूर्ति की श्रद्धा पूर्वक निर्धारित प्रदक्षिणा करते हैं । हनुमान जी की साधना में ब्रह्मचर्यव्रत का पालन सबसे महत्वपूर्ण हैं । मन, वचन एवं कर्म से ब्रह्मचारी होना विषय वासनाओं से निरासक्त होना इस व्रत का आदर्श है ।

अनिष्ट शक्तियों का नियंत्रण करने वाले - हनुमान जी भूतों के स्वामी माने जाते हैं । इसलिए यदि किसी को भूत -बाधा हो तो उस व्यक्ति को हनुमान जी मंदिर ले जाते हैं या हनुमान स्रोत का पाठ करने के लिये कहा जाता है । जागृत कुण्डलिनी के मार्ग में यदि कोई बाधाएं आ जाये तो उसे दूर कर कुण्डलिनी को योग्य दिशा देने में भी हनुमान जी की आराधना से फल प्राप्त होता हैं ।

जितेन्द्रिय हनुमान - सीता जी को ढूँढने जब हनुमान जी रावण के अंतःपुर में गये तो उस समय उनकी जो मनः स्थिति थी, वह उनके उच्च चरित का सूचक है । इस संदर्भ में स्वयं कहते हैं - "सर्व रावण पत्नियों को निः शंक लेटे हुये मैंने देखा तो सही, परंतु देखने से मेरे मन में विकार उत्पन्न नहीं हुआ ।" अनेक संतों ने ऐसे जितेन्द्रिय हनुमान जी की पूजा निश्चित कर उनका आदर्श समाज के सामने रखा । जब भी दास्य भक्ति का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण देना होता है तो, हनुमान जी की रामभक्ति का स्मरण हो आता है । वे अपने प्रभु पर प्राण अर्पण करने के लिये सदैव तैयार रहते हैं । हनुमान सेवक व सैनिक का एक सुंदर सम्मिश्रण हैं । हनुमान की भक्ति सदा प्रत्यक्ष फल देने वाली होती है ।

हिन्दुओंके आराध्य हनुमान - आज हम किसी नगर या ग्राम को देखे तो वहां हनुमान जी की प्रतिमा के दर्शन अवश्य होते है । यहां तक कि आठ दस मकानों वाले छोटे ग्रामों में भी हनुमान जी के दर्शन होते है, भले ही वहां मंदिर न हो, मूर्ति पाषाण खंड पर उत्कीर्ण न हुई हो किंतु सिंदूर चर्चित आंजनेय कर अनगढ़ श्री

विग्रह अवश्य दृष्टिगोचर होता है । अनेक स्थानों पर प्रायः यह भी देखा गया है कि पवन कुमार की ये मूर्तियां पीपल वृक्ष के नीचे बने या उसी वृक्ष से टिकी हुई अथवा वृक्ष के नीचे हनुमत मंदिर में प्राप्त होती है ।

हिंदू धर्मावलंबियों में दक्षिण मुखी हनुमान प्रतिमा का विशेष महत्व है । इस मूर्ति का मुख दक्षिण को ओर होता है, इसलिए इसे दक्षिणमुखी हनुमान कहते हैं । मंत्र-तंत्र इत्यादि प्रयोग प्रमुखतः ऐसी मूर्ति के सम्मुख ही किये जाते हैं। प्रायः शनिवार व मंगलवार हनुमान के दिन माने जाते हैं । इस दिन हनुमान जी की प्रतिमा को सिंदूर व तेल अर्पण करने की प्रथा है । कुछ जगह तो नारियल चढ़ाने का भी रिवाज है । हनुमान चलीसा की प्रत्येक पंक्ति का पाठ करना भी अत्यंत चमत्कारिक माना गया हैं । प्रत्येक चैपाई विशिष्ट कार्य के लिये सिद्ध है। यदि कोई भी व्यक्ति पूर्ण विधान और श्रद्धा से हनुमान चलीसा पर आधारित साधना करता है तो वह सभी सिद्धियां प्राप्त कर सकता है । प्रतिदिन हनुमान जी के नामों का स्मरण करने से दुःख दूर होते हैं । वे नाम इस प्रकार है - अंजनीपुत्र, वायुपुत्र, फाल्गुन सुख, महाबली, अमित विक्रम ।

हनुमान जी को शक्तिशाली देवता माना गया है । उनकी पूजा एवं भक्ति करने वाले को बुद्धि, बल, यश, आरोग्य, चातुर्य, वाकपटुता की प्राप्ति होती है । भक्ति और शक्ति में हनुमान जी अतुलनीय है। हनुमान नाम में अमोघ शक्ति है । उनके नाम मात्र से भूत, प्रेत, पिशाच भाग जाते हैं । हनुमान की साधना से दैविक भौतिक सिद्धियों की प्राप्ति होती है । इसीलिए कहा गया है -

अष्टासिद्धि नवनिधि के दाता ।
अस बर दीन जानकी माता ।।

निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि हनुमान जी की भगवान श्रीराम के प्रति सेवा भावना ने उन्हें इतनी महत्ता दे दी कि वे स्वयं एक भगवान के रूप में पूजे जाने लगे हैं । उनके मंदिर और पूजा -स्थलों की संख्या किसी देवी-देवताओं के मंदिरों से कम नहीं है । जहां भी सेवा भावना की बात आती है वहां उनके आदर्श हनुमान जी है । वस्तुतः हनुमान जी भारतीय अस्मिता के रूप में प्रतिष्ठित ऐसे जन देवता हैं जो जन-जन के मन मंदिर में संकट मोचन के रूप में निवास करते हैं ।

संदर्भ ग्रंथ

1. हनुमान का देवत्व - सं. रामस्वरूप शर्मा
2. दैनिक भास्कर जबलपुर, 5 अप्रैल 2009
3 राज एक्सप्रेस, जबलपुर, 28 दिसम्बर 2010